24.03.2025

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

मीडिया और जन-संपर्क शाखा

द्वारका, नई दिल्ली

हिंदी कार्यक्रम

बोर्ड की विभिन्न शाखाओं में राजभाषा प्रोत्साहन गतिविधियों के क्रम में "विश्व कविता दिवस-21 मार्च 2025" के उपलक्ष्य में 24.03.2025 को मीडिया और जन-संपर्क शाखा में "हिंदी कविता पाठ" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह गतिविधि श्रीमती निति शंकर शर्मा , उप सचिव और श्रीमती रेनू भंडारी , सहायक सचिव के पर्यवेक्षण और देखरेख में आयोजित हुई।

कार्यक्रम की शुरुआत में श्रीमती निति शंकर शर्मा , उप सचिव ने हिंदी भाषा की अनूठी विशेषताओं की और सबका ध्यान आकर्षित करते हुए कहा *"हिंदी केवल एक भाषा नहीं , बल्कि भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। यह हमारी संस्कृति , हमारी परंपरा और हमारी अस्मिता का प्रतिनिधित्व करती है। कविता , शब्दों का वह जादू है जो हमारे हृदय को स्पर्श करती है , हमारे मन को झकझोरती है और हमें एक नई दृष्टि से सोचने को प्रेरित करती है। आज हम सभी यहाँ एक ऐसे ही भावनात्मक साहित्यिक आयोजन में सम्मिलित होने के लिए एकत्रित हुए हैं - हिंदी कविता पाठ। यह केवल शब्दों का संकलन नहीं , बल्कि विचारों की लयबद्ध प्रस्तुति है, जिसमें हमारी भावनाएँ, हमारी संवेदनाएँ और हमारे सपने बसे हैं! तो आइए , इस साहित्यिक यात्रा का आनंद लें और शब्दों की इस मधुर धारा में हिंदी कविता की सुंदरता का अनुभव करें।"*

इस हिंदी कार्यक्रम में अधिकारी/कर्मचारीगण द्वारा निम्न सारणी अनुसार प्रस्तुतियाँ दी गई:-

श्रीमती कीर्ति शर्मा, निजी सचिव ने जीवन पर एक बेहतरीन और प्रेरक कविता का पाठ किया, कुछ अंश :

जिन्दगी को जी
उसे समझने की कोशिश न कर
सुन्दर सपनों के ताने-बाने बुन
उनमें उलझने की कोशिश न कर
चलते वक्त के साथ तू भी चल
उसमें सिमटने की कोशिश न कर
अपने हाथों को फैला, खुल कर सांस ले
अन्दर ही अन्दर घुटने की कोशिश न कर...

श्री गोविन्द शर्मा, अनुभाग अधिकारी ने अपनी स्व-रचित "कोरा कागज़""कविता के माध्यम से जीवन के साथ बहते और इसमें पिरोये गए प्रकृति, मानवीय संबंधों और चुनौतियों आदि के विविध रंगों को कुछ इस तरह बखूबी अभिव्यक्त किया:-

कोरा है कागज क्या मैं लिखूं
भँवरे का प्रेम फूलों से लिखूं

मोर बसंत राग बरखा से लिखूं
पहाड़ों का सौंदर्य लिखूं
या नदियों का कल-कल बहना
या जीवन का साहस या डर का सहना

कोरा है कागज क्या मैं लिखूं
कवि की कविता लिखूं
या नाटक के बिहरंग
होली की हुड़दंग लिखूं
या जीवन के रंग
राग-बैराग सब लिख दूं
या लिखूं सुरों के संगीत
या लिखूं इस जीवन का गीत
कोरा है कागज क्या मैं लिखूं
मौसम को संगीत में पिरोकर लिखूं
या शांति के पैगाम से कलम रंग दूं
अपने का परायापन लिखूं
या लिखूं भीड़ में अकेलापन
अंधेरों में रोशनी लिख दूं
या किरणों के उजाले की छाया लिख दूं...

उन्होंने बताया कि मातृभाषा में बोलना, लिखना सरल है, अतः हमें पढ़ाई-लिखाई, सम्प्रेषण आदि में मातृभाषा हिंदी का प्रयोग करना चाहिए।"

सुश्री रेनू कैन्थ , अधीक्षक ने श्री अभि जीत बालकृष्ण मुंडे की श्रीराम पर एक कविता का पाठ किया और इसके माध्यम से श्रीराम के विराट व्यक्तित्व द्वारा जीवन में मर्यादा और आदर्शो की महत्ता की ओर ध्यान आकृष्ट किया:

"राम राम तो कह लोगे पर
राम सा दुख भी सहना होगा
पहली चुनौती ये होगी कि
मर्यादा में रहना होगा....
काम क्रोध के भीतर रखकर तुमको शीतल बनना होगा
बुद्ध भी जिसकी छाँव में बैठे वैसा पीपल बनना होगा...

श्रीमती नेहा खेड़ा, निजी सहायक ने अपनी स्व-रचित रचना *"हे नारी तू है शक्तिशाली"* द्वारा नारी शक्ति के स्वरूप को सुन्दर शब्दों में अभिव्यक्त किया। काव्यांश :

हे नारी तू है शक्तिशाली
तू ही बेटी
तू ही माता
तू ही जग की धारणी
तू ही जग को आगे बढ़ाने वाली

तू ही घर को चलाने वाली
तू ही दुर्गा
तू ही माँ काली
तेरी शक्ति है निराली
हे नारी तू है शक्तिशाली।।
तेरे त्यागों का जवाब नहीं
तेरी शक्ति का जवाब नहीं
तेरी सहनशक्ति का जवाब नहीं
तेरी भक्ति का जवाब नहीं
तेरी ममता का जवाब नहीं
हे नारी तू है शक्तिशाली।।

श्री आशीष कुमार, कनिष्ठ सहायक ने केदारनाथ अग्रवाल की "जीवन की धूल " कविता सुनाई और सभी श्रोताओं को प्रेरित किया:-

जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है
तूफानों से लड़ा और फिर खड़ा हुआ है
जिसने सोने को खोदा लोहा मोड़ा है
जो रवि के रथ का घोड़ा है
वह जन मारे नहीं मरेगा
नहीं मरेगा...

श्री देवेन्द्र, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने सभी को विनोद कुमार शुक्ल जी की कविता "हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था" सुनाई।

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था
व्यक्ति को मैं नहीं जानता था
हताशा को जानता था
इसलिए मैं उस व्यक्ति के पास गया
मैंने हाथ बढ़ाया
मेरा हाथ पकड़कर वह खड़ा हुआ
मुझे वह नहीं जानता था
मेरे हाथ बढ़ाने को जानता था
हम दोनों साथ चले
दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे
साथ चलने को जानते थे।

वहीं श्री सुरेन्द्र कुमार, एमटीएस द्वारा एक प्यारी सी बाल कविता पेश की गई। इस क्रम में श्रीमती मीनाक्षी, अधीक्षक ने हिंदी भाषा में बिंदु"के महत्त्व को दर्शाती एक प्रतीकात्मक कहानी सुनाई। श्रीमती मीनाक्षी ने इस कविता का भी पाठ किया:-

गिरना भी अच्छा है
"गिरना भी अच्छा है,
औकात का पता चलता है...

बढ़ते हैं जब हाथ उठाने को...
अपनों का पता चलता है!

जिन्हें गुस्सा आता है,
वो लोग सच्चे होते हैं,
मैंने झूठों को अक्सर
मुस्कुराते हुए देखा है...

सीख रहा हूँ मैं भी,
मनुष्यों को पढ़ने का हुनर,
सुना है चेहरे पे,
किताबों से ज्यादा लिखा होता है...!"

श्रीमती रेनु भंडारी, सहायक सचिव ने अपनी स्व-रचित कविता "हर हाल में खुश हूँ" सुनाकर सभी का मन मोह लिया।

हर हाल में खुश हूँ।
जिंदगी थोड़ी है हर हाल में खुश हूँ।
काम में खुश हूँ, आराम में खुश हूँ।
आज पनीर नहीं तो दाल में खुश हूँ।
आज गाड़ी नहीं तो पैदल ही खुश हूँ।
आज कोई नाराज है तो उसकी इस अदा से खुश हूँ।
जिसको देख नहीं सकता, उसकी आवाज से खुश हूँ।
जिसको पा नहीं सका, उसको सोचकर खुश हूँ।
बीता हुआ कल जा चुका हैं, उसकी याद में खुश हूँ।
आने वाले कल का पता नहीं, उसके इन्तजार में खुश हूँ।
अगर पंक्तियाँ पसंद आई, तो जवाब देना
अगर नहीं दोगे, तो भी खुश हूँ।

श्रीमती कीर्ति शर्मा, निजी सचिव और श्रीमती समोला, अधीक्षक ने हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा दिनांक 20.03.2025 को बोर्ड के कर्मचारियों के लिए आयोजित हिंदी कार्यशाला में प्राप्त जानकारी सभी कार्मिकों के साथ साझा की| उन्होंने बताया कि कार्यालय में हिंदी में कार्य को कैसे सुचारू रूप से किया जाए एवं जहां हिंदी अनुवाद की आवश्यकता हो उसे कंठस्थ 2.0 की सहायता से कैसे प्रभावी रूप से किया जाए। उन्होंने साथ ही, निम्न बिन्दुओं की जानकारी दी:-

- अनुवाद के ई-टूल्स के अर्थ/महत्व एवं आवश्यकता
- अनुवाद के प्रकार / पहलू
- हिन्दी अनुवाद के लिए नवीनतम एवं सटीक ई-टूल्स

श्रीमती निति शंकर शर्मा, उप सचिव महोदया ने हिंदी कार्यक्रम के आयोजन के लक्ष्य की ओर सबका ध्यान आकर्षित करते हुए सभी स्टाफ़ सदस्यों से अपना राजकीय कार्य राजभाषा में करने का आग्रह किया। उन्होंने ऐसी हिन्दी प्रोत्साहन गतिविधियाँ प्रत्येक माह आयोजित करने का भी आग्रह किया।
उन्होंने मीडिया और जन-संपर्क शाखा में वर्तमान में चल रहे कार्यों का विवरण हिंदी में सभी सदस्यों के साथ साझा किया, स्टाफ द्वारा निष्पादित कार्य को सराहा और आगे की कार्य-योजना रखते हुए सभी को हिंदी में राजकीय कार्य करने के लिए प्रेरित किया।
उपर्युक्त के अतिरिक्त अन्य श्रोता कर्मचारीगण ने भी गतिविधि में प्रत्यक्ष/परोक्ष रूप से भाग लिया।

सभी ने एकजुट होकर शाखा के कार्य और राजभाषा लक्ष्यों को उत्कृष्टता के साथ पूरा करने की प्रतिबद्धता जताई।

इसके साथ हिंदी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

झलकियाँ

****